CALL@7235808541

An initiative of VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
Galaxy Achieve Your Goal

कोरल रीफ

चर्चा में क्यों

हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के ग्रेट बैरियर रीफ पर काम कर रहे वैज्ञानिकों ने प्रवाल लार्वा को जमने और संग्रहीत करने के लिए एक नई विधि का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है।

जिससे जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का सामना कर रहे कोरल रीफ की रक्षा की जा सकेगी ।

कोरल रीफ

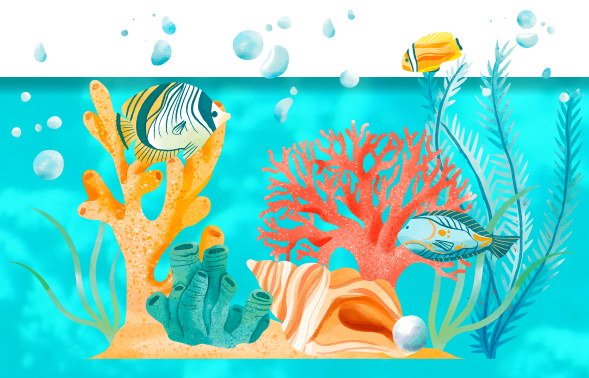

- **कोरल रीफ समुद्र के भीतर स्थित चट्टान हैं जो प्रवालों द्वारा परित्यक्त कैल्शियम कार्बोनेट से निर्मित होती हैं।**
- **वस्तुतः ये एककोशिकीय छोटे जीवों की बस्तियाँ होती हैं, जो जुजैन्थिली नामक शैवाल के साथ सहजीवी सम्बन्ध साझा करते हैं ।**

प्रवालों की उपस्थिति की दशाएँ

- **साधारणतः प्रवाल-शैल-श्रेणियाँ, उष्ण एवं उथले सागरों, विशेषकर प्रशांत महासागर में स्थित, अनेक उष्ण अथवा उपोष्णदेशीय द्वीपों के सामीप्य में बहुतायत से पाई जाती है।**
- **ये केवल उन्हीं स्थानों पर जीवित रह सकते है, जहाँ पर जल निर्मल, उथला और उष्ण होता है।**
- **प्रवाल के लिये 200 सें. ऊपर का ताप और 200 फुट से कम की गहराई अत्याधिक अनुकूल होती है।**

कोरल ब्लीचिंग

- **कोरल तापमान, प्रकाश, या पोषक तत्वों जैसी स्थितियों में बदलाव से नकारात्मक रुप से प्रभावित होते हैं, तो वे अपने ऊतकों में रहने वाले सहजीवी शैवाल को बाहर निकाल देते हैं, फलस्वरुप वे पूरी तरह से सफेद हो जाते हैं।**
- **इसे ही प्रवाल विरंजन या कोरल ब्लीचिंग कहते हैं।**